LEIBNITZ - MONADOLOGY

लाइबनितज़ - चिदणुवाद

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan

(For Part- 1 Hons. Students)

देकार्ते और स्पिनोजा ने द्रव्य को स्वतंत्र सत्ता माना है जिसे लाइबनितज़ ने स्वतंत्र शक्ति के रूप में परिवर्तित कर दिया।द्रव्य को परिभाषित करते हुए लाइबनितज़ ने कहा है कि," शक्ति वस्तुतः सत्य है तथा देश ,काल, गति आदि अपने आप में सत्य नहीं है ,पर वे वे सत्य हैं क्योंकि उसमें ईश्वरीय गुण निहित हैं (Force something truly real even in created substance but space ,time and notion partake of the the nature of material entities and are true and real not of themselves but since they envolve divine attribute)।लाइबनितज़ के कहने का अर्थ है कि शक्ति ही द्रव्य है जो सारी वस्तुओँ का मूल रचनात्मक तत्व है।

लाइबनितज़ ने द्रव्य को चिदणु कहा है।इसे उन्होंने ब्रूनो से ग्रहण किया है ब्रूनो के दर्शन का छाप लाइबनितज़ पर स्पष्टतः दिखाई पड़ती है । चिदणु ,'चित'और अणु के संयोग से बना है,चित का तात्पर्य है चैतन्य और अणु यानी परमाणु का संयोग है।चिदणु को जानने से पूर्व यह जानना आवश्यक प्रतीत होता है कि चित क्या है और अणु क्या है।

लाइबनितज़ ने यह माना है कि चैतन्य या चित् के अतिरिक्त है कुछ भी नहीं है किसी की सता नहीं है ।अब प्रश्न उठता है कि जिसे अचित या जड़ कहा जाता है वह क्या है? इनके अनुसार अचित या जड़ नामक कोई वस्तु नहीं है क्योंकि जिसे हम जड़ या अचित कहते हैं वह चैतन्य की ही एक अवस्था है जहां चेतना की कमी रहती है और उन्होंने यह माना है कि चित्, चेतना या आत्मा की चार अवस्थाएं होती हैं - **अचेतन(Unconscius) ,उपचेतन (Sub-conscious),चेतन (Conscious) और स्वचेतन (Self-conscious)।**

अचेतन - इस अवस्था में चेतना की कमी रहती है जिसे मूर्छा अवस्था भी कहा जाता है ।
उपचेतन - इस अवस्था में चेतना की अवस्था स्वप्न की अवस्था जैसी होती है।
चेतन - यह जाग्रतावस्था की स्थिति है ।
स्वचेतन - इस अवस्था में चैतन्य की चेतना का बोध होता है अर्थात चेतना इसमें अपना स्वसंवेदन करती है।

अचेतन और उपचेतन को लाइबनितज़ ने लघुचेतन कहा है क्योंकि अचेतन और उपचेतन में भी क्षीण चेतना ठीक उसी प्रकार रहती है जिस प्रकार समुद्र की गर्जना में छोटी बड़ी सभी समुद्री तरंगों की आवाज रहती है पर इसका सामूहिक रूप में केवल गर्जना ही सुनाई पड़ती

है। अलग-अलग तरंगों की आवाज नहीं सुनाई पड़ती। यह बात अचेतन और उपचेतन के साथ भी है।

अब जहाँ तक अणु का प्रश्न है लाइबनितज़ ने गणित और जड़ पदार्थ को सामने रखकर दोनों में से अपनी आवश्यकता अनुसार विचार कर इसे निरूपित किया है।गणित के बिन्दु देखने में सत्य प्रतीत होता पर वह कल्पना मात्र है।चिदबिन्दु पूर्णतः सत्य है क्योंकि इसमें विराट विश्व निहित है। गणित के परमाणु बिंदु विभाज्य है जबकि चिदबिन्दु अविभाज्य है क्योंकि वह शक्ति स्वरूप है शक्ति के संघात के कारण ही विभिन्न वस्तुओं की उत्पत्ति है। संघातरूप वस्तु का विनाश होता है परंतु मौलिक रूप शक्ति का नहीं क्योंकि जिसकी उत्पत्ति होती है उसी का विनाश भी होता है ।परंतु शक्ति सनातन होने के कारण उसकी प्रतपति नहीं होती अतः उत्पत्ति ना होने से इसका विनाश भी नहीं होता(Moreover, such centers of forces must be eternal, they cannot be destroyed only, a miracle could destroy them-nor can they be created, monads can neither rise nor disappear -F.Thilly,A History of Philosophy,P.387)। इस प्रकार लाइबनितज़ का चिदणु निरवयव, अविभाज्य, चेतन और अविनाशी है।

लाइबनितज़ ने चिदणु की जो कल्पना चित और अणु के माध्यम से की वह असंख्य ,अनादि,अनन्त और नित्य है। प्रत्येक एक पृथक विश्व के समान है जो आत्म निर्भर है तथा अपने में एक विशाल विश्व छिपाए है। प्रत्येक चिदणु स्वतंत्र एवं स्वावलंबी है इसलिए किसी भी चिदणु को दूसरी चिदणु की आवश्यकता नहीं पड़ती और न ही किसी प्रकार का एक दूसरे के प्रति आदान-प्रदान ही होता है।आदान-प्रदान का प्रश्न तो वहां आता है जहां लेन-देन का कोई मार्ग हो परंतु लाइबनितज़ का चिदणु तो गवाक्षहीन अर्थात क्षीद्ररहित (Windowless) है। उसमें कोई भी ऐसा मार्ग या द्वार नहीं जिससे कोई वस्तु बाहर की ओर निकल तथा भीतर की ओर प्रवेश कर सके(It has no window by which anything can enter or passout)।

लाइबनितज़ ने यह माना है कि सभी चिदणु एक दूसरे से निरपेक्ष पार स्वतंत्र हैं।प्रत्येक चिदणु विशिष्ट अर्थात अनोखा है ।प्रत्येक चिदणु अपनी सत्ता के लिए ईश्वर के अतिरिक्त और किसी पर भी आश्रित नहीं है। हर एक चिदणु एक ऐसे कमरे के समान है जिसमें कोई खिड़की नहीं है।चिदणुओं में परस्पर कोई संबंध नहीं है और ना उनमें किसी प्रकार का आदान-प्रदान होता है। इतना अवश्य है कि उनका मौलिक स्वरूप समान है। लाइबनितज़ ने द्रव्य की सत्ता को स्वीकार करते हुए यह कहा है कि अभिभाज्यता द्रव्य का अनिवार्य गुण है।द्रव्य के सरलतम रूप होने के कारण चिदणु अविभाज्य हैं। इसलिए उनका कोई आकार नहीं है वे किसी आकाश जैसी कल्पना में स्थान नहीं घेरते। वस्तुओं तथा जीव के निर्माण में चिदणु संयुक्त तथा पृथक होते हैं। किंतु इससे स्वयं चिदणुओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ।समस्त चिदणु शाश्वत है ।जबसे सृष्टि हुई है तब से चिदणु हैं। उनको कोई नष्ट

नहीं कर सकता केवल कोई चमत्कार हीन उन्हें नष्ट कर सकता है ।जब तक सृष्टि रहेगी तब तक सभी चिदणु रहेंगे ।

सभी चिदणु सरल तात्विक अणु होने के कारण गतिशील हैं। यह सही है कि वे परस्पर न किसी को प्रभावित करते हैं और न स्वयम प्रभावित होते हैं पर उनमें क्रिया जुड़ी हुई है ।चिदणुअपने स्वभाव से ही विकासोन्मुख सक्रिय होते हैं ।उनमें प्रत्यक्ष एवं प्रयास दोनों होते हैं, इसलिए उनमें गतिशीलता पाई जाती है।

चितशक्ति की विभिन्नताओं के आधार पर लाइबनितज़ ने चिदणु के पाँच प्रकार बताये हैं : -

अचेतन चिदणु - इनमें क्षीणतम चैतन्य पाया जाता है।इसमें चेतना का अभाव नहीं रहता बल्कि चेतना सुप्त या मूर्छित अवस्था में रहता है।किसी चिदणु को जड़ कहने का तात्पर्य यह है कि उसमें चेतना की निम्न अवस्था पाई जाती है।उपनिषदों में इसे 'अन्नमय कोश'कहा गया है।

उपचेतन चिदणु - इनमें अचेतन चिदणुओं की अपेक्षा चेतना की मात्रा कुछ अधिक पाई जाती है।यह क्षीणतर संवेदन का स्तर है जहाँ प्राण स्पंदन पाया जाता है।इस स्थिति में स्वप्न की स्थिति सी रहती है।सभी बनस्पति जगत इन्हीं उपचेतन चिदणुओं से मिलकर बना है। उपनिषद के अनुसार यह 'प्राणमय कोश' है।

चेतन चिदणु - यह क्षीण-स्पष्ट ज्ञान का स्तर है।इसके अंतर्गत ऐसे चिदणु आते हैं जो स्पष्ट तो होते हैं पर पूर्णतः स्पष्ट नहीं होते।उपनिषद में इसे 'मनोमय कोश' कहा गया है।

स्वचेतन चिदणु - जब चिदणु चैतन्य से स्वचैतन्य की ओर अग्रसर होते हैं तो उन्हें स्वचेतन चिदणु कहा जाता है ।यह अवस्था में चिदणुओं के स्पष्ट ज्ञान की अवस्था है, जहां प्राणी को आत्मबोध होने लगता है। वह अपने स्वभाव को समझने लगता है।लाइबनितज़ ने इसे आत्म जगत या मानव जगत(Spirit monad or human monad) कहा है।उपनिषद में इन्हें 'विज्ञानमय कोश' कहा गया है।

परम चिदणु - अंतिम श्रेणी में केवल एक ही चिदणु आता है जो परम चिदणु या ईश्वर है। यह श्रेष्ठतम चिदणु है जो' 'पुरुषोत्तम'है।इसमें पूर्ण क्रियाशक्ति पाई जाती है ।ईश्वर चूँकि परम चिदणु है इसलिए इसमें नाममात्र की भी जड़ता नहीं है।उपनिषद में इसे 'आनन्दमय कोश' कहा गया है।

लाइबनितज़ के द्वारा चिदणुओं का श्रेणी विभाजन यह दर्शाता है कि चिदणुओं में एक विकास क्रम है जो निष्क्रियता से सक्रियता की ओर अग्रसर होते रहते हैं और चेतन से उपचेतन ,उपचेतन से चेतन, चेतन से स्वचेतन ,स्वचेतन से परम चेतन तक सभी चिदणु विकासोन्मुख है जिससे यह ज्ञात होता है कि लाइबनितज़ विकासवाद के समर्थक हैं।